जनवरी 2021

₹ 20

समाजवादी बुलेटिन

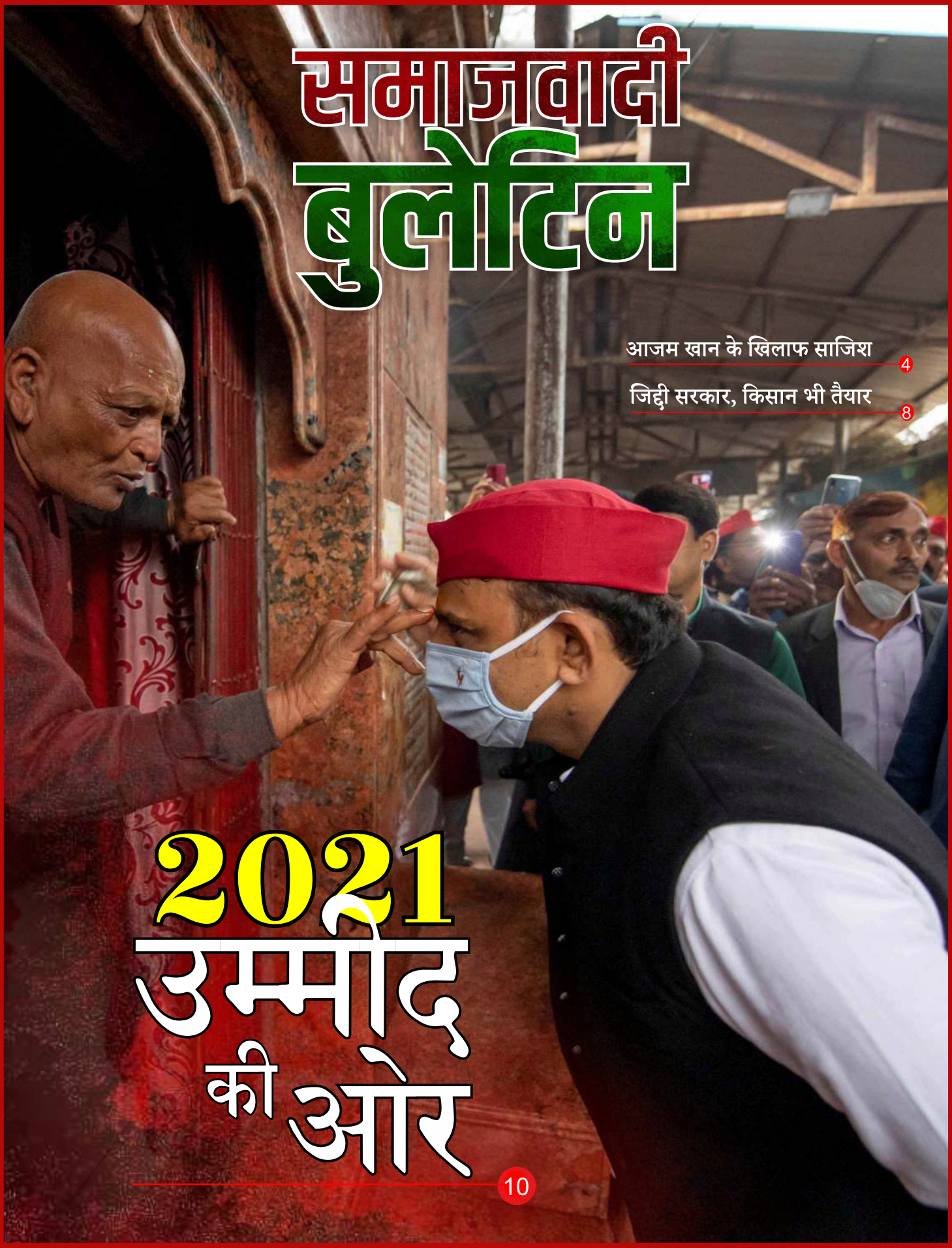

आजम खान के खिलाफ साजिश 4

जिद्दी सरकार, किसान भी तैयार 8

2021 उम्मीद की ओर

10

R.N.I. No. 68832/97

पूरी दुनिया में परिवर्तन की लहर है। सपा शुरू से परिवर्तन की राजनीति करती रही है। नौजवान ही माहौल बनाते हैं। नौजवानों की बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। देश को शक्तिशाली बनाने वाले तीन लोग हैं, किसान, नौजवान और व्यापारी।

मुलायम सिंह यादव
संस्थापक-संरक्षक, समाजवादी पार्टी

समाजवादी बुलेटिन

जनवरी 2021

वर्ष 22| संख्या 03

प्रिय पाठकों,

नववर्ष की शुभकामनाएं

समाजवादी बुलेटिन को नए और बदले कलेवर में निकलते हुए एक साल हो गए। आप सबके प्रेम और बहुमूल्य सुझावों का इसमें अहम योगदान रहा। इसके डिजिटल संस्करण को भी आप सबने सराहा। बुलेटिन को और बेहतर बनाने का हमारा प्रयास जारी रहेगा। आप सभी के सहयोग की आकांक्षा है।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक

प्रोफेसर रामगोपाल यादव

☎ 0522 - 2235454

samajwadibulletin19@gmail.com

bulletinsamajwadi@gmail.com

Mob:- 9598909095

/samajwadiparty

समाजवादी पार्टी के लिए

19, विक्रमादित्य मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित

आस्था प्रिंटर्स, गोमती नगर, लखनऊ से मुद्रित

R.N.I. No. 68832/97

अंदर

श्री अखिलेश यादव डॉ. तज़ीन फ़ातिमा से मिले

4

10 कवर स्टोरी **2021 उम्मीद की ओर**

लोकतंत्र की चुनौतियां गणतंत्र दिवस 46

फोटो सौजन्य - गूगल

जनता की आवाज ही लोकतंत्र की असली आवाज है। भारत का संविधान 'हम भारत के लोग' से शुरू होता है। संविधान ताईद करता है कि भारत लोगों का है किसी सत्ता, शासक, दल या विचारधारा का नहीं।

सामाजिक क्रांति की युगनायिका 54 समाजवादी व्यापार सभा की बैठक 50

श्री अखिलेश यादव रामपुर में डॉ. तज़ीन फ़ातिमा से मिले

आजम साहब के खिलाफ सरकार की साजिश

पूरी सपा हमारे साथ- तज़ीन फ़ातिमा

समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं रामपुर के सांसद श्री आजम खान व परिवार के सदस्यों के खिलाफ उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार ने सियासी रंजिश के कारण मुकदमे दर्ज कराए हैं, लेकिन न तो आजम साहब न परिवार के हौसले पस्त हुए हैं।

यह बात श्री आजम खान की पत्नी और रामपुर से समाजवादी पार्टी की विधायक डॉ. तज़ीन फ़ातिमा ने कही है। जमानत मिलने के बाद वे 21 दिसंबर 2020 को सीतापुर जेल से रिहा होकर रामपुर पहुँचीं। जेल से बाहर निकलने के बाद मीडिया से बातचीत में डॉ. तज़ीन फ़ातिमा ने कहा कि समाजवादी पार्टी पूरी तरह से हमारे साथ है और जो मदद पार्टी कर सकती थी, वो की गई। पार्टी को लेकर जो अफवाह फैलाई जा रही हैं वो गलत हैं। हमारे इरादे मजबूत हैं। जो लोग कमजोर पड़ रहे हैं या मायूस हैं उन्हें भी यह समझना चाहिए कि वक्त हमेशा एक जैसा नहीं रहता है।

डॉ. तज़ीन फ़ातिमा ने कहा कि 10 महीने बाद मुझे कैद से रिहाई मिली है, क्योंकि न्यायपालिका ने मेरे साथ इंसाफ किया है। जैसे न्यायपालिका से मुझे इंसाफ मिला है, वैसे ही आजम खान साहब को भी इंसाफ मिलेगा। हमारा तालीमी मिशन जारी रहेगा। उन्होंने कहा कि आजम खान साहब का अवाम के लिए यह संदेश है कि जौहर यूनिवर्सिटी की हिफाजत होनी चाहिए।

उन्होंने कहा कि मुकदमे तो जरूर दर्ज हुए, लेकिन न्यायपालिका से इंसाफ मिला और आगे भी उम्मीद है।

पूरा मुल्क जानता है कि यह ज़्यादती है। इसके बाद भी हम अपना तालीमी मिशन जारी रखेंगे। हर मुमकिन कोशिश करेंगे कि जौहर विश्वविद्यालय को बचाया जाए। रामपुर में सपा की सरकार में बनवाए गेटों और पार्कों के नाम बदले जाने पर उन्होंने कहा कि हमारा भी वक्त आएगा।

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने कहा है कि उत्तर प्रदेश सरकार ने सपा के वरिष्ठ नेता एवं रामपुर के पार्टी सांसद आजम खान को षडयंत्र का शिकार बनाया है। उन्हें फंसाने में सरकार के साथ भ्रष्ट पुलिस एवं प्रशासनिक अधिकारी जिम्मेदार हैं। जिस पुलिस अफसर ने आजम साहब को फंसाया,वह आज ट्रांसफर पोस्टिंग के गंभीर आरोप में लिप्त हैं। वहीं जिलाधिकारी प्रदेश सरकार की कठपुतली बने हुए हैं। यदि सरकार भ्रष्ट अधिकारियों पर कार्रवाई कर दे तो भ्रष्टचार खत्म हो जाएगा।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव 22 जनवरी को रामपुर में श्री आजम खान के घर पहुंचे एवं उनकी पत्नी एवं रामपुर की विधायक डॉ. तज़ीन फ़ातिमा व परिवार के अन्य सदस्यों से मिले। उन्होंने तज़ीन फ़ातिमा जी के साथ करीब डेढ़ घंटे बात की। मुलाकात के बाद श्री अखिलेश यादव ने कहा कि हमारे पारिवारिक ताल्लुकात हैं। कई मुद्दों पर बातचीत हुई है। उल्लेखनीय है कि डॉ. तज़ीन फ़ातिमा बीते महीने ही जमानत मिलने के बाद रिहा होकर रामपुर पहुंचीं हैं।

उसके बाद वे श्री आजम खान द्वारा स्थापित मौलाना मोहम्मद अली जौहर यूनिवर्सिटी गए। जहां प्रेस कांफ्रेंस में उन्होंने साफ कहा कि अगर जौहर यूनिवर्सिटी पर कोई भी आंच आएगी तो उसके लिए पार्टी आजम

खान साहब के साथ खड़ी है और पार्टी इसके लिए साइकिल यात्रा निकालेगी। उन्होंने कहा कि पूरी समाजवादी पार्टी आजम खान साहब एवं उनके परिवार के साथ लगातार मजबूती से खड़ी है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि यह सरकार जो अच्छी चीज या इमारत देख लेती है उसे गिरा देती है। यह सरकार विकास करने वाली नहीं बल्कि विनाश करने वाली है। भाजपा के लोग विकास को विनाश बनाते हैं क्योंकि उन्हें कोई सुंदर चीज अच्छी नहीं लग सकती। कोई भी अच्छी चीज होगी उसको तोड़ देंगे। जिन्होंने जिंदगी भर ठोकना- मारना सीखा हो उनसे पढ़ाई की उम्मीद क्या करेंगे। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार जानबूझकर सपा के नेताओं और कार्यकर्ताओं पर झूठे मुक़दमें लगा रही है, लेकिन जनता तैयार है। उसे जिस दिन मौका मिलेगा इस सरकार को हटा देगी। आजम खान साहब हमारी पार्टी के नेता हैं। हम उनके साथ हैं। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने जौहर यूनिवर्सिटी में पढ़ने वाले छात्र छात्राओं को यह भरोसा दिलाया की पार्टी और वह खुद श्री आजम खान के साथ खड़े हैं और वह लोग परेशान न हों।

यूपी सरकार को सुप्रीम कोर्ट से झटका, आजम साहब के खिलाफ याचिका खारिज

सुप्रीम कोर्ट ने जन्म प्रमाणपत्र के कथित जालसाजी मामले में समाजवादी पार्टी के सांसद श्री आजम खान, उनकी पत्नी तज़ीन फ़ातिमा और बेटे अबदुल्ला को दी गई जमानत को चुनौती देने संबंधी उत्तर प्रदेश सरकार की तीन अलग-अलग याचिकाओं को 21 जनवरी 2021 को खारिज कर दिया। न्यायमूर्ति अशोक भूषण, न्यायमूर्ति आर सुभाष रेड्डी और न्यायमूर्ति एम आर शाह की एक पीठ ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय के 13 अक्टूबर, 2020 के आदेश को चुनौती देते हुए राज्य सरकार द्वारा दायर अपील को खारिज कर दिया। हाईकोर्ट ने जमानत दी थी। पीठ ने अपने आदेश में कहा, 'विशेष अनुमति याचिका खारिज की जाती हैं। गौरतलब है कि उच्च न्यायालय ने मामले में जमानत दे दी थी। यूपी सरकार ने इलाहाबाद हाईकोर्ट के फैसले को चुनौती दी थी। उल्लेखनीय है कि 34 मामलों में जमानत मिलने के बाद डॉ. तज़ीन फ़ातिमा रिहा हो चुकी हैं जबकि श्री आजम खान को भी कई मामलों में राहत मिल चुकी है।

जिद्दी सरकार किसान भी तैयार

बुलेटिन ब्यूरो

लगभग 2 महीने से चल रहे किसान आंदोलन को तोड़ने के लिए किसानों के धैर्य की परीक्षा ले रही केन्द्र सरकार हर मोर्चे पर मात खा रही है । किसानों ने साफ कर दिया है कि तीन विवादित कृषि कानूनों को वापस लिए जाने से कम पर उन्हें कोई समझौता मंजूर नहीं। वही सुप्रीम कोर्ट से फटकार खाने के बाद मोदी सरकार कृषि कानूनों को डेढ़ साल तक स्थगित रखने की बात कर रही है जिसे किसानों ने ठुकरा दिया है।

स्वाभाविक तौर पर कृषि क्षेत्र से जुड़े विशेषज्ञों का मानना है कि सरकार बेवजह की जिद पर आमादा है क्योंकि इन कानूनों को स्थगित रखने का एलान करने का कोई खास मतलब नहीं है क्योंकि यह इस बात की गारंटी नहीं कि सरकार इन्हें डेढ़ साल बाद लागू नहीं कर देगी। यह भी माना जा रहा है कि यदि सरकार को यहीं करना था तो किसानों को 2 महीने से हाड़ कपाती सर्दी में सड़क पर क्यों पड़े रहने दिया और क्यों इतने सारे किसानों को जान गंवानी पड़ी।

सरकारी जिद ने किसानों का हौसला जरा भी नहीं टूटने दिया है। वह आंदोलन को और लंबा चलाने के लिए कृत संकल्प है एवं यह स्पष्ट कर दिया है कि गणतंत्र दिवस यानी 26 जनवरी को उनका दिल्ली में ट्रैक्टर मार्च पूर्व घोषित कार्यक्रम के मुताबिक होगा।

उल्लेखनीय है कि इन तीन कृषि कानूनों के खिलाफ किसानों ने लंबा आंदोलन चला रखा है क्योंकि उन्हें स्पष्ट आशंका है कि यदि यह कानून लागू हो गए तो उनकी खेती संकट में पड़ जाएगी और न्यूनतम समर्थन मूल्य की गारंटी नहीं रह जाएगी। हैरानी की बात यह भी है कि वार्ता के इतने सारे दौर के बाद भी सरकार अपनी इस जिद पर अड़ी रही कि वह इन कृषि कानूनों को वापस नहीं लेगी जबकि सभी जानते हैं कि किस प्रकार संसद के दोनों सदनों से बिना किसी चर्चा के कृषि विधेयकों को पास करवा लिया गया।

जबकि समाजवादी पार्टी समेत सभी विपक्षी दलों ने मांग की थी कि इसे इतनी हड़बड़ी में न पास करके संसदीय समिति को भेजा जाए ताकि सभी पहलुओं पर गौर हो जाए। लेकिन सत्ता के मद में चूर भाजपा सरकार ने एक न सुनी और उसका नतीजा है कि किसान आज सड़कों पर उतर कर इन कानूनों की वापसी के लिए आंदोलन कर रहा है लेकिन जिद पर अड़ी सरकार उनकी इस मांग को सुनने के लिए तैयार नहीं है।

माना जा रहा है कि 2 महीने तक मामले को अपनी जिद के कारण लटकाए रखने के बाद केंद्र सरकार अब इसे डेढ़ साल तक के लिए स्थगित रखने की बात दरअसल इसलिए कर रही है ताकि उसे और फ़ज़ीहत न झेलनी पड़े। किसानों द्वारा गणतंत्र दिवस के दिन दिल्ली में ट्रैक्टर रैली निकालने की घोषणा सरकार के गले की हड्डी बन गई है क्योंकि जब यह मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंचा तो कोर्ट ने साफ शब्दों में कह दिया कि वह इस पर रोक नहीं लगाएगी क्योंकि यह दिल्ली पुलिस का मामला है।

वहीं इस महीने के अंत से शुरू हो रहे संसद सत्र के दौरान भी विपक्षी दल इस मामले को जोरशोर से उठाएंगे यह तय है। विपक्ष के तेवरों से बचने के लिए सरकार इसे स्थगित करने की आड़ में छुप जाना चाहती थी लेकिन यह संभव नहीं लग रहा। किसानों के समर्थन में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव के निर्देश पर सपा ने लगातार आंदोलन के कार्यक्रम चला रखे हैं। अखिलेश जी किसानों के समर्थन में सड़क पर उतर कर गिरफ्तार भी हो चुके हैं। सपा के किसान घेरा कार्यक्रम को कृषकों का भारी समर्थन मिला था।

किसान आंदोलन में जेल जानेवालों का सम्मान

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने कहा है कि समाजवादी नेतृत्व ने आजादी की लड़ाई और आजाद भारत में भी जनहित के मुद्दों पर सरकार को घेरा और संघर्ष किया है। जेल यातना से समाजवादी झुकते नहीं है। पुलिस की बैरीकेडिंग और आंसू गैस, लाठीचार्ज से लोकतंत्र के कारवां को रोका नहीं जा सकता है।

निर्देश पर जब समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ता लखनऊ में धरना दे रहे थे तब पुलिस ने भाजपा सरकार के इशारे पर पहले बर्बरता से लाठीचार्ज किया जिसमें कई घायल हो गए। पुलिस ने जबरन महिलाओं और दिव्यांगों की भी गिरफ्तारी की। 69 कार्यकर्ताओं को जेल भेज दिया। जेल यात्रियों के साथ जेल में अपमानजनक व्यवहार किया गया। उनकी रिहाई के बाद समाजवादी पार्टी ने उनका सम्मान किया।

गिरफ्तार कर जेल भेजे गए समाजवादी

श्री अखिलेश यादव ने किसानों के संघर्ष के समर्थन में शांतिपूर्ण धरने के दौरान पुलिस द्वारा लाठीचार्ज में घायल और जेल भेजे गए समाजवादी नेताओं-कार्यकर्ताओं के अभिनंदन के अवसर पर हुए कार्यक्रम में उन्हें संबोधित कर रहे थे।

उल्लेखनीय है कि 14 दिसम्बर 2020 को संघर्षरत किसानों के समर्थन में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव के

कार्यकर्ताओं नेताओं में जयसिंह जयंत, सुशील दीक्षित, शब्बीर अहमद खान, अनुराग यादव, इंदल रावत, सौरभ सिंह यादव, डा॰ राम करन निर्मल,मनोज यादव, चौधरी ज्ञान सिंह, सुभाष यादव एडवोकेट, महेश सिंह लोधी, डा॰ संतोष रावत, सुजीत यादव, प्रेम चन्द्र यादव, मनोज कुमार पाल, शशिलेन्द्र यादव, श्री त्रिभुवन यादव, आर.पी. यादव 'दिलीप', शिवकुमार टाइगर, प्रवेश कुमार यादव, सूरज राजपूत लोधी, आशुतोष यादव, अकरम सिद्दीकी, महेन्द्र यादव, राजकिशोर यादव, अनुराग यादव, सुरेन्द्र यादव 'अमित', आकाश रावत, सुरेश कुमार कश्यप, कुलदीप यादव, अमर सिंह, रमेश कुमार रावत, विजय सिंह यादव, दीपक रंजन, मनीष यादव, विकास यादव, रामसिंह राणा, तारा चन्द्र यादव, अवनीश कुमार यादव, दुर्गेश कश्यप, मुनव्वर आलम कुरैशी, रितेश साहू, आलोक यादव, मिर्जा जफर इकराम, प्रशांत यादव, विभव यादव, राजेन्द्र पाण्डेय, बिल्लू, मुन्ना हाशमी, हर्ष विशिष्ट, फरीद अहमद, शैलेन्द्र वर्मा, मो. फैज, सागर कनौजिया, समीर खान, अनुज यादव, मो0 तारीख, हिमांशु, मेराज अहमद, धनपाल यादव, मोहित यादव, राजसिंह यादव, अनुज यादव, मौलाना इसराइल, ओमनाथ बिन्द, उमेश यादव, संजय यादव, वीरेन्द्र यादव, सौगेन्द्र यादव, दिलीप सिंह कृष्णा शामिल थे।

2021 उम्मीद की ओर

दुष्यंत कबीर

अभी-अभी गुजरा वर्ष 2020 यदि महामारी से उपजे तनाव, संकट, दुविधा, अनिश्चितता समेत तमाम प्रकार की नकारात्मकता से भरा था तो नया साल 2021 उम्मीदों और आकांक्षाओं की आहट लेकर आया है। कोरोना का प्रभाव कम होता लग रहा है और उम्मीद है कि आगे आने वाले दिनों में स्थिति और बेहतर होगी। विवादित कृषि कानूनों को लागू करने पर सुप्रीम कोर्ट की रोक और किसानों द्वारा चलाया जा रहा है लंबा आंदोलन यह उम्मीद भी जगा रहा है कि आम लोग जन आंदोलनों के जरिए निरंकुश सरकारों को कड़ा संदेश दे सकते हैं।

किसान आंदोलन की ही ताकत है कि इन कानूनों के अमल पर रोक लग पाई और सरकार की ज़िद का भी लगातार पर्दाफाश हुआ। किसानों का आंदोलन अभी भी जारी है और यह इस ओर भी

2021 इस मायने में भी उम्मीद का साल है क्योंकि साल 2022 में उत्तर प्रदेश में विधानसभा के चुनाव होने हैं और 2021 से उत्तर प्रदेश की जनता के मन में यह आकांक्षा और बलवती होती चली जाएगी कि हर मोर्चे पर फेल भाजपा सरकार की उल्टी गिनती शुरू हो चुकी है और शीघ्र ही भाजपा सरकार से मुक्ति मिलेगी।

संकेत करता है कि संगठित तरीके से, मुद्दों पर कायम रहकर लंबे आंदोलनों को निश्चय ही चलाया जा सकता है। इस आंदोलन की धारावाहिकता एवं कामयाबी लोकतांत्रिक मूल्यों में विश्वास करने वाले लोगों, राजनीतिक दलों और संगठनों की हौसला अफजाई भी करते हैं।

मसलन समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव कृषि कानूनों के पास होने के बाद से ही इसके विरोध में मुखर थे और जब किसानों का आंदोलन शुरू हुआ तब भी वे लगातार किसानों के पक्ष में खड़े रहे।

कृषि कानूनों का विरोध करते हुए वह लखनऊ में गिरफ्तार तक हुए। किसानों के समर्थन में समाजवादी पार्टी ने लगातार कई कार्यक्रम भी किए जिनमें बहुचर्चित 'किसान घेरा' कार्यक्रम भी शामिल रहा।

2021 इस मायने में भी उम्मीद का साल है क्योंकि साल 2022 में उत्तर प्रदेश में विधानसभा के चुनाव होने हैं और 2021 से उत्तर प्रदेश की जनता के मन में यह आकांक्षा और बलवती होती चली जाएगी कि हर मोर्चे पर फेल

भाजपा सरकार की उल्टी गिनती शुरू हो चुकी है और शीघ्र ही भाजपा सरकार से मुक्ति मिलेगी। साल 2021 में जनता की उम्मीद का अहम हिस्सा यह भी है कि उत्तर प्रदेश में फिर एक बार श्री अखिलेश यादव के नेतृत्व में समाजवादी पार्टी की सरकार बनेगी। जिस सरकार में उत्तर प्रदेश वापस विकास के रास्ते पर लौटेगा, समाज में आपसी वैमनस्य कम होगा और राज्य के युवाओं को एक बेहतर उत्तर प्रदेश में अपना भविष्य संवारने का पूरा अवसर मिलेगा।

2021 उत्तर प्रदेश के लोगों की उम्मीदों के पंख फैलाने का वर्ष साबित होने जा रहा है इसके संकेत भी साल के पहले ही महीने में दिखने लगे हैं। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने वर्ष का अपना पहला राजनीतिक कार्यक्रम चित्रकूट में रखा। चित्रकूट यानी मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम की भूमि। चित्रकूट में कामतानाथ जी के दर्शन एवं कामदगिरि की परिक्रमा करने के बाद समाजवादी पार्टी के प्रशिक्षण शिविर में श्री अखिलेश यादव शामिल हुए। उन्हें देखने और उनसे अपनी बात कह पाने की लोगों में जबरदस्त ललक दिखी। अखिलेश जी ने भी किसी को

निराश नहीं किया। उन्होंने चित्रकूट से रवाना होने के पहले कहा कि चित्रकूट का आशीर्वाद मिला है फिर से समाजवादी पार्टी की सरकार बनेगी। चित्रकूट से लखनऊ वापसी के रास्ते में बांदा, फतेहपुर, रायबरेली समेत तमाम जगहों पर हजारों की भीड़ ने श्री अखिलेश यादव का स्वागत किया।

यह इस बात का संकेत है कि जनता भाजपा सरकार को सत्ता से हटाकर समाजवादी पार्टी की सरकार बनाने का मन बना चुकी है। साल 2021 जनता की इस उम्मीद की शुरुआत है।

स्पष्ट है कि आने वाले महीनों में श्री अखिलेश यादव उत्तर प्रदेश के और भी कई हिस्सों में जाएंगे और 2021 में उम्मीद की रफ्तार लगातार और तेज होती जाएगी जिसका निर्णायक मुकाम 2022 में विधानसभा का चुनाव और उसमें समाजवादी पार्टी की सरकार का गठन होगा।

2021 में भाजपा विरोधी राजनीति करने वालों के लिए भी समाजवादी पार्टी ही बड़ी उम्मीद है। विभिन्न दलों से प्रमुख नेताओं के अपनी पार्टी छोड़कर समाजवादी पार्टी में शामिल होने से ऐसे ही संकेत मिलते हैं। प्रदेश के लगभग सभी हिस्सों से कई वरिष्ठ एवं महत्वपूर्ण नेताओं के सपा में शामिल होने का सिलसिला 2021 में भी जारी है।

लिहाजा यह स्पष्ट है कि राजनीति के इन अहम किरदारों को इसका आभास एवं उम्मीद है कि भाजपा को सत्ता से हटाने का सियासी दम समाजवादी पार्टी में ही है क्योंकि उसका नेतृत्व एक अत्यंत दूरदर्शी, विकास परक सोच के धनी और नए विचारों से लबरेज श्री अखिलेश यादव जैसे नेता के हाथों में है।

2021 उत्तर प्रदेश के लोगों की उम्मीदों के पंख फैलाने का वर्ष साबित होने जा रहा है इसके संकेत भी साल के पहले ही महीने में दिखने लगे हैं। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने वर्ष का अपना पहला राजनीतिक कार्यक्रम चित्रकूट में रखा। चित्रकूट यानी मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम की भूमि।

॥ चित्रकूट ॥
महिमा अमित

बुलेटिन ब्यूरो

चित्रकूट महिमा अमित कही महामुनि गाइ।
आइ नहाए सरित बर सिय समेत दोउ भाइ॥

अर्थात- महामुनि वाल्मीकिजी ने चित्रकूट की अपरिमित महिमा बखान कर कही। तब सीताजी सहित दोनों भाइयों ने आकर श्रेष्ठ नदी मंदाकिनी में स्नान किया

उपरोक्त पंक्तियों में धर्मनगरी चित्रकूट के महातम्य का सुंदर वर्णन है। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने वर्ष 2021 के अपने पहले बड़े पार्टी कार्यक्रम के लिए इसी चित्रकूट नगरी को चुना।

पार्टी के प्रशिक्षण शिविर को संबोधित करने पहुंचे श्री अखिलेश यादव ने रात्रि प्रवास चित्रकूट में ही किया और अगले दिन 8 जनवरी को भगवान कामतानाथ की पूजा अर्चना की। उन्होंने कामदगिरि की परिक्रमा भी पूरी की। कामदगिरि की परिक्रमा के दौरान उन्होंने संतो, व्यापारियों, गुरूजनों, वरिष्ठ नागरिकों से आशीर्वाद लिया कि वह शक्ति मिले जिससे गरीबों की सेवा कर सकें और प्रदेश की सुखसमृद्धि के लिए समाजवादी सरकार बन सके। अखिलेश जी ने कहा, मिला चित्रकूट का आशीर्वाद फिर से आयेगी सपा सरकार।

परिक्रमा के बाद अखिलेश जी ने मंदिर परिसर के पास स्थित दुकानदारों से मुलाकात करके भरोसा दिया की दुकानों को उजड़ने नहीं दिया जाएगा। चित्रकूट से समाजवादी विचारकों के गहरे संबंधों को याद करते हुए श्री अखिलेश यादव ने कहा कि

डॉक्टर राम मनोहर लोहिया जी ने यहां रामायण मेला और रामलीला की शुरुआत की थी। जिसे नेताजी श्री मुलायम सिंह यादव ने भी आगे बढ़ाया। यहां के पुजारी, संत, व्यापारी और नौजवान सभी समाजवादी सरकार के कार्य को याद कर रहे हैं।

श्री अखिलेश यादव ने कहा है कि भाजपा झूठ और नफरत की राजनीति करती है। चित्रकूट ऐतिहासिक, पुरातात्विक और धार्मिक स्थल है, भाजपा ने इसके विकास के लिए कुछ भी नहीं किया है। भाजपा ने चित्रकूट की उपेक्षा कर रखी है।

श्री यादव ने घोषणा की कि समाजवादी सरकार बनने पर चित्रकूट का सुंदरीकरण होगा, लक्ष्मण पहाड़ी का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विकास होगा। रामलीला के मंचन से जुड़े कलाकारों को धर्म, जाति के भेद के बिना विशेष पेंशन दी जाएगी। चित्रकूट में बड़ी हवाई पट्टी भी बनेगी। श्री अखिलेश यादव ने चित्रकूट में पत्रकार वार्ता में कहा कि चित्रकूट में रोप-वे का रंग रोगन तो हो गया परन्तु लक्ष्मण पहाड़ी, मंदिर परिसर और चित्रकूट के कई मार्ग उपेक्षा के शिकार हैं। भाजपा के चार साल पूरे हो रहे हैं पर सभी काम अधूरे हैं। समाजवादी सरकार के समय चित्रकूट में पर्यटन विकास के लिए बड़े विमानों और व्यवसायिक उड़ानों हेतु हवाई पट्टी का जो काम शुरू हुआ था भाजपा सरकार में ठप्प पड़ा है। विकास का कहीं पता नहीं।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि समाजवादी सरकार बनने पर चित्रकूट के पुरातात्विक, ऐतिहासिक एवं पौराणिक महत्व को देखते हुए यहां नागरिक सुविधाएं बढ़ाई जाएंगी। नेता जी के समय चित्रकूट में कई विकास कार्य हुए थे। बाद में समाजवादी सरकार ने उस पर ध्यान दिया। उन्होंने कहा रामायण मेला का प्रारम्भ

डॉ लोहिया की प्रेरणा से हुआ था। परम्पराओं को जोड़ने का काम यहां रामायण मेला में जिन कलाकारों ने किया उन सभी को, जो मंच पर कला प्रदर्शन कर रहे थे, विशेष पेंशन समाजवादी सरकार बनने पर दी जाएगी। रामायण मेला से मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के आदर्श जीवन के दर्शन होते हैं।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि आज लोकतंत्र पर खतरा है। अमेरिका में घटी घटना चिंताजनक है। यहां उत्तर प्रदेश में सुप्रीमकोर्ट और हाईकोर्ट ने जंगलराज माना है। निर्दोषों पर झूठे मुकदमें और एनएसए नहीं लगाने को कहा है। फर्जी एनकाउण्टर और हिरासत में मौतों पर मानवाधिकार आयोग ने राज्य सरकार को नोटिसें दी हैं। श्मशान निर्माण में भी भ्रष्टाचार हो रहा है।

स्वामी विवेकानंद जयंती

युवा घेरा में गूंजा युवा जोश

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव के निर्देश पर 12 जनवरी को राजधानी लखनऊ सहित प्रदेश के सभी जनपदों में स्वामी विवेकानंद की जयंती पर उनका पुण्य स्मरण करते हुए पुष्पांजलि अर्पित की गई। श्री अखिलेश यादव के निर्देशानुसार पूरे उत्तर प्रदेश में हजारों जगह समाजवादी युवा घेरा कार्यक्रम आयोजित हुआ। प्रदेश के सभी जिला मुख्यालयों में, गांवों, शहरों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में घेरा बनाकर युवाओं से संबंधित मुद्दों पर चर्चा की गई। समाजवादी सरकार के समय युवाओं और छात्र-छात्राओं को दी गई राहतों के बारे में भी सभी को अवगत कराया गया। समाजवादी युवा प्रकोष्ठों के पदाधिकारी युवा घेरा कार्यक्रम में सक्रियता से शरीक रहे। कार्यक्रम में छात्रों-नौजवानों के साथ समाजवादी पार्टी के सांसद, विधायक एवं वरिष्ठ नेता भी बड़ी संख्या में शामिल रहे। समाजवादी पार्टी मुख्यालय में स्वामी विवेकानंद जी के चित्र पर विधानसभा में नेता विरोधी दल श्री राम गोविन्द चौधरी, राष्ट्रीय सचिव श्री राजेन्द्र चौधरी तथा प्रदेश अध्यक्ष श्री नरेश उत्तम पटेल ने पुष्पांजलि अर्पित की।

युवा घेरा कार्यक्रम में नौजवानों के लिए रोजगार के घटते अवसर, बढ़ती बेरोजगारी, महंगी शिक्षा, छात्र संघों के चुनावों पर रोक, ऑनलाइन शिक्षा की दिक्कतें, छात्रों पर फर्जी आपराधिक मुकदमों के साथ बदहाल कानून व्यवस्था में बहन बेटियों के साथ बढ़ते दुष्कर्म, शिक्षा क्षेत्र में राजनीतिक हस्तक्षेप, छात्र संघों पर रोक आदि मुद्दों पर युवा छात्र नेताओं ने विचार व्यक्त किए। युवा घेरा में कहा गया कि भाजपा सरकार द्वारा अमानवीय और संवेदन शून्य व्यवहार किए जाने से छात्र-छात्राओं और नौजवानों में भारी रोष है।

छात्र युवा आंदोलन को कुचलने के लिए भाजपा सरकार लाठीचार्ज, आंसू गैस के इस्तेमाल के साथ एनएसए जैसे गंभीर आपराधिक केस भी लगाए जा रहे हैं। बहाने बनाकर छात्र संघों के चुनाव रोके जा रहे है। शिक्षा संस्थाओं में आरएसएस की विचारधारा को बढ़ावा दिया जा रहा है।

भाजपा सरकार ने युवाओं को बहकाने के लिए रोजगार के बड़े-बड़े वादे किए। रोजगार के अवसर तो सृजित नहीं हुए, अलबत्ता जो काम पर लगे थे उनकी भी छंटनी हो गई। लाकडाउन में बड़े पैमाने पर नौकरियों में छंटनी हुई। ग्रामीण इलाकों में इससे विषम सामजिक परिस्थितियां भी बनीं। लाकडाउन अवधि में शिक्षा संस्थान बंद रहे। ऑनलाइन पढ़ाई के नाम पर छात्र-छात्राओं को सिर्फ गुमराह किया गया क्योंकि गरीब बच्चों के पास स्मार्टफोन या लैपटाप नहीं

नौजवान ही परिवर्तन के वाहक: अखिलेश यादव

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने स्वामी विवेकानंद जी को भावांजलि देते हुए कहा कि स्वामी जी ने असहाय और समाज के वंचित वर्गो की सेवा को ही ईश्वर की भक्ति माना था। अध्यात्म को सामाजिक सरोकारों से जोड़ा था। उन्होंने शिक्षा, सेवा, त्याग और समर्पण पर विशेष बल दिया था। उनका राष्ट्रवाद कट्टरता से मुक्त समन्वयवादी है। स्वामी जी मानते थे कि सांप्रदायिकता, असहिष्णुता और जातीयता ने इस देश को बहुत नुकसान पहुंचाया है।

स्वामी विवेकानंद केवल अध्यात्म की चर्चा ही नहीं करते थे बल्कि उसे सामाजिक सरोकारों से

भी जोड़ते थे। उनके राष्ट्रवाद में वंचितों के प्रति त्याग, समर्पण और सेवा का विशेष महत्व था। साम्प्रदायिकता और जातीयता को वे देश के विकास में घातक समझते थे। स्वामी जी लोकतंत्र की मूल भावना, सहिष्णुता और सार्वभौमिक स्वीकृति पर विशेष बल देते थे।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि स्वामी विवेकानंद का कहना था कि हमे सार्वभौमिक सहिष्णुता पर विश्वास के साथ सभी धर्मों को सच के रूप में हमें स्वीकार करना चाहिए। वे मानते थे कि मानवता से बड़ा कोई धर्म नहीं है। भूखे पेट और निरक्षरता से अध्यात्म की चर्चा नही हो सकती है। उन्होंने युवाओं को स्वास्थ्य, शिक्षा और अनुशासनपूर्ण जीवन का संदेश दिया था।

अखिलेश जी ने कहा कि स्वामी विवेकानंद जी की जयंती को सार्थक बनाने के लिए युवा घेरा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। देश का युवा नेतृत्व ही कल के भारत का भाग्य निर्धारित करेगा। युवा ही क्रांति और परिवर्तन का वाहक रहा है। समाजवादी पार्टी युवा शक्ति को आगे बढ़ाने को प्राथमिकता देती रही है। आज नौजवानों के सामने महंगी होती शिक्षा और रोजगार बड़ी समस्या हैं।

जहां नौजवान सरकारी विसंगतियों के खिलाफ आवाज उठाते हैं उनका उत्पीड़न शुरू हो जाता है। उन पर तमाम आरोप लगते हैं, फर्जी मुकदमों में फंसाया जाता है। युवाओं-छात्रों का भविष्य बिगाड़ने के लिए उन पर एन.एस.ए. भी लगा दिया जाता है। नौजवानों की जिंदगी के सामने आज अंधेरा छाया हुआ है। भाजपा सरकार की कुनीतियों के चलते रोटी-रोजगार के अवसर कम हुए है।

उन्होंने कहा कि भाजपा सत्ता में नौजवानों को हर वर्ष दो करोड़ रोजगार देने के वादे के साथ आई थी। उसके हर वादे की तरह यह वादा भी हवा हवाई साबित हुआ है। प्रदेश में पूंजीनिवेश आया नहीं, नए उद्योग लगे नहीं, इच्छुक निवेशकर्ताओं को भी सरकार से उपेक्षा मिली और लाकडाउन में तो तमाम फैक्ट्रियां भी बंद हो गई। व्यापार चौपट हो गया।

बड़े पैमाने पर श्रमिकों का पलायन हुआ। नौकरियों में छंटनी हुई। बेरोजगारी पर कहीं रोक नहीं लगी सरकारी विभागों में रिक्तियां होने के बावजूद भर्तियां रुकी हुई हैं। समाजवादी सरकार में कौशल प्रशिक्षण के साथ जो रोजगार के अवसर सृजित किए गए थे, भाजपा राज में उन्हें भी बंद कर दिया गया। नौकरियों के अवसर घटते जा रहे हैं।

है। कालेजों, विश्वविद्यालयों में जबरिया फीस वसूली अभिभावकों के लिए मुसीबत से कम नहीं है।

युवा घेरा में शामिल छात्राओं में इसपर तीव्र रोष था कि छेड़खानी एवं रेप की घटनाओं में रोजान इजाफा हो रहा है। इनका कहना था कि समाजवादी सरकार ने अपराध नियंत्रण के लिए यूपी डायल 100 नम्बर और महिला अपराधों की रोकथाम के लिए 1090 वूमेन पावर लाइन सेवा शुरू की थी। भाजपा ने इन्हें बर्बाद कर दिया। बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओं का नारा बेटी के अपमान और बेटी से दुष्कर्म में बदल गया है।

फोटो फीचर

राष्ट्रीय अध्यक्ष जी का चित्रकूट-बांदा दौरा

माननीय अखिलेश यादव जी
182 सरेनी
विधानसभा क्षेत्र में

UP32

ALL INDIA
PUMA

आप सभी को
नव वर्ष- 2021, मकरसंक्रान्ति
एवं
गणतन्त्र दिवस
की
हार्दिक शुभकामनाएं

वतन्त्रता संग्राम सेनानी
सुना प्रसाद बोस जी
को
र्ण श्रद्धांजलि

नववर्ष पर आयोजन

21 का संकल्प 22 में बनाएंगे सपा सरकार

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी मुख्यालय, लखनऊ में 1 जनवरी 2021 को नववर्ष पर मंगल कामनाओं का आदान-प्रदान किया गया एवं वर्ष 2022 के विधानसभा चुनावों में बहुमत के साथ समाजवादी सरकार बनाने के लिए एकजुट होने का संकल्प लिया गया।

सपा मुख्यालय पहुंचे पूर्व रक्षामंत्री व समाजवादी

पार्टी के संस्थापक-संरक्षक श्री मुलायम सिंह यादव ने कार्यकर्ताओं को नववर्ष 2021 की बधाई देते हुए सरकार बनाने के काम में जुट जाने को कहा। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने सभी देशवासियों एवं प्रदेशवासियों को नए वर्ष पर बधाई देते हुए उनके सुख-समृद्धि की कामना की।

लोकतंत्र बचाने का आखिरी चुनाव अगले वर्ष 2022 में होना है। भाजपा को हराने का अंतिम अवसर है।

श्री अखिलेश यादव ने विशाल जनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि लोकतंत्र बचाने का आखिरी चुनाव अगले वर्ष 2022 में होना है। भाजपा को हराने का अंतिम अवसर है। किसान, गरीब, नौजवान सभी भाजपा के विरूद्ध लामबंद हो रहे हैं और समाजवादी पार्टी के साथ हैं।

भाजपा झूठ पर शोध करती है और नफरत फैलाती है। श्री अखिलेश यादव ने कहा कि पार्टी कार्यकर्ताओं को जनता को सच्चाई बतानी है और समाजवादी पार्टी की सरकार की उपलब्धियों के बारे में भी बताना है।

उन्होंने कहा कि महंगाई बढ़ गई है। सरकार किसानों को बहका रही है। किसानों को बाजार के सहारे पर नहीं छोड़ा जा सकता है। भाजपा सरकार कारपोरेट की पक्षधर है इसीलिए किसान विरोधी तीन कानून बनाकर उसे बर्बाद करने का षडयंत्र रचा है जिसके विरोध में किसान आक्रोशित है।

श्री अखिलेश यादव से बड़ी संख्या में लोगों ने मिलकर नए वर्ष की बधाई दी। भेंटकर्ताओं में हजारों कार्यकर्ता, विधायक, डाक्टर, प्रोफेसर, अधिवक्ता, विभिन्न संगठनों के पदाधिकारी शामिल थे। सभी ने 2022 में श्री अखिलेश यादव को मुख्यमंत्री बनाने का भरोसा दिया।

अंतरराष्ट्रीय ज्योतिष एवं वास्तु अनुसंधान केन्द्र के पण्डित हरिप्रसाद मिश्र, राजपुरोहित ने मंत्रोच्चारण के साथ आशीर्वाद दिया और रक्षासूत्र बांधा। कुछ लोगों ने श्री यादव को 'हल' भेंट किया। श्री साफ़े जुबैरी सभासद देवां शरीफ तथा दानिश सिद्दीकी बाराबंकी ने देवां शरीफ आस्ताने की प्रतिकृति भेंट की। किन्नर सोनम चिश्ती ने भी शुभकामना दी। बड़ी संख्या में महिलाएं, नौजवान और अल्पसंख्यक भी भेंट करने वालों में शामिल थे।

पार्टी मुख्यालय में हर्षोल्लास के वातारण में किशन सिंह धानुक की बैण्ड पार्टी ने देशभक्ति के गीत सुनाये, तो सपेरा समाज की बीन भी गूंजी। गीत संगीत के साथ अखिलेश जी को नए वर्ष के लिए दुआएं मिल रही थी। लोग कह रहे थे आततायी भाजपा सरकार से अगले वर्ष अखिलेश जी ही छुटकारा दिलायेंगे।

सर्वधर्म समभाव

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी मुख्यालय, लखनऊ 2 जनवरी 2021 को सर्वधर्म समभाव की गंगा-जमुनी संस्कृति का गवाह बना। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव को अयोध्या से बड़ी संख्या में आए साधु संतो, मौलाना, उलेमाओं, आचार्यों तथा सिख समाज के प्रमुख लोगों ने सन् 2022 के विधानसभा चुनावों में विजयी होकर मुख्यमंत्री बनने का आशीर्वाद दिया। उन्होंने श्री अखिलेश यादव की कामयाबी के लिए अपने अनुयायियों, परिचितों व क्षेत्रवासियों से सम्पर्क करने का भी भरोसा दिया।

श्री अखिलेश यादव ने इस अवसर पर अपने संबोधन में कहा कि भाजपा सरकार झूठ पर

टिकी है। जितने वादे किए सब झूठे निकले। मुख्यमंत्री रोजगार के झूठे आंकड़े दे रहे हैं। कहां, किसको रोजगार मिला यह वे बताते नहीं। बाहर से निवेश आया नहीं, उद्योग लगे नहीं। किसान को खाद, बीज महंगे मिल रहे है। डीजल-बिजली के दाम बढ़े हुए हैं। किसानों की आय दोगुनी हुई नहीं, न ही किसान को न्यूनतम समर्थन मूल्य मिला।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि किसान आंदोलन कर रहे हैं तो उनको आतंकवादी बताया जा रहा है। किसान अन्नदाता है, पर उसको अपमानित किया जा रहा है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष जी अखिलेश यादव ने कहा कि विगत वर्ष में दिन तकलीफ भरे रहे। वैश्विक महामारी के अलावा भाजपा ने राजनीति में भी मुश्किलें खड़ी की। उम्मीद है आने वाला समय अच्छा होगा। उन्होंने कहा कि **धर्म प्रमुखों का एक साथ आना शुरुआत है कि प्रदेश में समाजवादी पार्टी की जीत होगी। समाजवादी सरकार बनने पर अयोध्या में 365 दिन दीपावली होगी और रामभक्तों तथा धार्मिक स्थलों को टैक्स से मुक्ति मिलेगी। अयोध्या को हेरिटेज सिटी का दर्जा मिलेगा।**

श्री अखिलेश यादव ने याद दिलाया कि देश प्रदेश में जो गंगा-जमुनी तहजीब है उसकी परम्परा बहुत पुरानी है। यहां अनेकता में एकता दिखती है। हम वसुधैव कुटुम्बकम में विश्वास करते हैं। यहां विविध पूजा पद्धतियों वाले धर्म हैं। इसके बावजूद दिलों को बांधने वाले धार्मिक स्थल हैं। हमारा संकल्प देश को खुशहाली के रास्ते पर ले जाने का है। भाजपा ने तो कुछ किया नहीं। वह समाजवादी पार्टी के कार्यों को ही अपना बताती है।

धर्म प्रमुखों का एक साथ आना शुरुआत है कि प्रदेश में समाजवादी पार्टी की जीत होगी। समाजवादी सरकार बनने पर अयोध्या में 365 दिन दीपावली होगी और रामभक्तों तथा धार्मिक स्थलों को टैक्स से मुक्ति मिलेगी। अयोध्या को हेरिटेज सिटी का दर्जा मिलेगा।

22 में बाइसिकल

अयोध्या के पूर्व विधायक (पूर्व मंत्री) श्री पवन पाण्डेय ने बताया कि यह पहला मौका है जब हिन्दू-मुस्लिम और सिख धर्मानुयायी एक साथ एक मंच पर समाजवादी पार्टी और श्री अखिलेश यादव के पक्ष में आए हैं। इस मौके पर अयोध्या के डा॰ फिरोज अहमद ने पढ़ा

"आवाजे खलक को नक्कारे खुदा समझो, जिसे दुनिया बजा कहे उसे बजा समझो।", आचार्य मिश्र जी ने श्री अखिलेश यादव को यशस्वी, विजयी और लोकप्रिय होने का आशीर्वाद दिया।

सभी का यह कहना था कि अखिलेश जी प्रदेश के ही नहीं जनता के हृदय के मुख्यमंत्री हैं। समाजवादी पार्टी की सरकार ने संस्कृत विद्यालयों और मदरसों दोनों की मदद दी थी। भाजपा सरकार द्वेष भाव रखती है।

मौलानाओं ने कहा कि अयोध्यावासी भाजपा राज में कराह रहे हैं। वे संकल्प लेते हैं कि सन् 2022 में समाजवादी पार्टी की सरकार बनाएंगे और मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव को बनाएंगे। कार्यक्रम में संत समाज से अयोध्यावासी सर्वश्री श्यामा सदन पीठाधीश्वर महंत श्रीधर दास जी, महंत दिलीप दास जी, आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री जी, महंत रामदास जी महाराज, आचार्य पवनदास जी महाराज, आचार्य शिवेन्द्र जी, श्री हेमंतदास जी महाराज, महंत रामकुमार दास जी, महंत देवेश दास जी, बाबा भवनाथ दास जी महाराज, आचार्य श्रवण कुमार जी, आचार्य शिवानंद मिश्र जी, महंत अनिल मिश्रा जी, बालयोगी रामदास जी महाराज, पुजारी पंकज मिश्रा अयोध्या, महंत श्री कन्हैया दास जी भक्त माल भवन अयोध्या, महंत महावीर दास जी विश्व विराट मंदिर नया घाट अयोध्या शामिल रहे।

मुस्लिम समाज से हाजी असद अहमद, मौलाना

अयोध्यावासी भाजपा राज में कराह रहे हैं। वे संकल्प लेते हैं कि सन् 2022 में समाजवादी पार्टी की सरकार बनाएंगे और मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव को बनाएंगे।

मोहम्मद असलम साहब पेश इमाम अयोध्या, मोहम्मद सूफियान, मोहम्मद मोहसिन साहब, कारी अब्दुल वहीद साहब, मौलाना नौशाद, शमीम साहब, मौलाना इरफान साहब, मोहम्मद अहमद साहब, हजरत मौलाना सिराज साहब, मौलाना अयूब साहब, कारी मारूफ साहब पेश इमाम विलाल मस्जिद, मौलाना फजलुद्दीन साहब, मौलाना अब्दुल हलीम साहब, जनाब सिराजुल हक मास्टर साहब शामिल रहे।

सिख समुदाय के सरदार जसबीर सिंह सेठी, मनमोहन सिंह, प्रीतपाल सिंह छाबड़ा, रवीन्द्र सिंह, हरचरन सिंह, गुरूचरन सिंह, हरजीत सिंह कालू, भगवंत सिंह, प्रीतपाल सिंह गांधी, गुरूमीत सिंह, करमवीर सिंह शामिल रहे।

भारत में लोकतंत्र की चुनौतियां

रविकान्त
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी, लखनऊ विवि

"राष्ट्र गीत में भला कौन वह
भारत भाग्य विधाता है
फटा सुथन्ना पहने जिसका
गुन हरचरना गाता है
मखमल टमटम बल्लम तुरही
पगड़ी छत्र चंवर के साथ
तोप छुड़ाकर ढोल बजाकर
जय-जय कौन कराता है
पूरब-पश्चिम से आते हैं
सिंहासन पर बैठा, उनके
तमगे कौन लगाता है
कौन-कौन है वह जन-गण-मन
अधिनायक वह महाबली
डरा हुआ मन बेमन जिसका
बाजा रोज बजाता है।"

हिंदी के प्रसिद्ध कवि रघुवीर सहाय ने अगर आज यह कविता लिखी होती तो यकीनन वह देशद्रोह के आरोप में जेल में ठूंस दिए गए होते। रघुवीर सहाय के समय का 'भारत भाग्य विधाता' आज 'भारत भाग्य विनाशक' बन बैठा है! महाबली ने अपनी कीर्ति गाने वाले भांडों को अपने इर्द-गिर्द जमा कर रखा है और हरचरना फटेहाल कभी शहरों से लौटता सड़कों पर नंगे पांव चल रहा है। कभी वह भूखे पेट बच्चों को पीठ पर लादे हुए, कभी वह खुद साइकिल पर थका हारा बैठा है और उसकी औलाद उसे ठेले लिए जा रही है, हजारों कोस दूर अपने गांव-घर; जहां से भूख उसे खींच लाई थी पराए शहर। गणतंत्र दिवस के अवसर पर ये मुद्दे औरज्यादा अहम हो जाते हैं।

हरचरना पर कोरोना से ज्यादा सरकारी बदइंतजामी कहर बनकर टूटी है। भूख की मारी उसकी अंतड़ियों की ऐंठन के आगे कोरोना का खौफ कुछ भी नहीं था। लेकिन महाबली मजमा लगाने और अपनी जय-जयकार करवाने के लिए कभी रेडियो पर मन की बात करता तो कभी थाली और ताली पिटवाता रहा। हरचरना ने भी थाली बजाई और दीया जलाया लेकिन न तो उसके घर का सन्नाटा ही टूटा और ना ही रोशनी हुई। उसकी अंतड़ियों की ऐंठन और आँखों के सूनेपन के आगे महाबली का प्रहसन बेमानी था। लेकिन भांड लगातार महाबली की कीर्ति का बाजा बजाने में मशगूल थे। बिल्कुल डूबते टाइटैनिक के संगीतकारों की मानिंद!

आज वही हरचरना, वही जन दिल्ली की सीमाओं पर बैठा है। हाड़ कंपा देने वाली सर्दी में लाखों की तादाद में किसान तीन काले कानूनों के विरोध में पिछले करीब दो महीने से डटे हुए हैं। पांच दर्जन से अधिक किसान शहीद हो चुके हैं। लेकिन महाबली अधिनायक के कानों में जूँ तक नहीं रेंगी।महाबली मन की बात तो करता है लेकिन किसानों की बात न सुनता है और ना कहता है। हरचरना चीख चीखकर कह रहा है कि महाबली अपने मित्रों के मन की बात सुन रहा है। उनके लिए पिछले दरवाजे से किसानों की जमीन

हड़पने का इंतजाम कर रहा है। लाचार हरचरना आंदोलन के लिए मजबूर है लेकिन अधिनायक और उसका पूरा अमला तफरीह में मस्त है।

एक साल पहले भी दिल्ली और लखनऊ में जन आंदोलन हुआ था। सीएए-एनआरसी के विरोध में दिल्ली का शाहीन बाग लोकतांत्रिक प्रतिरोध का प्रतीक बनकर उभरा। शाहीन बाग में हजारों औरतें और बच्चे नागरिकता कानून को वापस कराने के लिए कई महीनों तक बैठे रहे। लेकिन तब भी अधिनायक ने उनकी आवाज को नहीं सुना। कोरोना और लोकतंत्र के नाम पर ही आजादी के बाद एक अनूठे आंदोलन को बेरहमी से कुचल दिया गया।

जबकि इसी काल में कोरोना की आहट के बीच महाबली द्वारा दुनिया के सबसे बड़े महाबली के सत्कार में लाखों की भीड़ से जय-जयकार

हाड़ कंपा देने वाली सर्दी में लाखों की तादाद में किसान तीन काले कानूनों के विरोध में पिछले करीब दो महीने से डटे हुए हैं। पांच दर्जन से अधिक किसान शहीद हो चुके हैं। लेकिन महाबली अधिनायक के कानों में जूँ तक नहीं रेंगी ।महाबली मन की बात तो करता है लेकिन किसानों की बात न सुनता है और ना कहता है।

करवाने के लिए करोड़ों खर्च करके मजमा जुटाया गया। जबकि फटेहाल हरचरना की गरीबी और गंदगी छुपाने के लिए उनके घरों के आगे दीवारें बना दी गईं और दीवारों पर उकेर दी गई थीं दो महाबलियों की गाथाएं। महाबली जब पश्चिम से आने वाले अपने मेहमानों की शान में कसीदे पढ़ रहे थे उसी समय उनके सिपहसालार सरेआम आंदोलनरत औरतों को लांछित ही नहीं कर रहे थे बल्कि धमका भी रहे थे। इसके बाद वही हुआ जिसका अंदेशा था। दंगों की साजिश में पूरे आंदोलन को निपटा दिया गया।

महाबली किसी भी जन आंदोलन को फासीवादी तरीके से मिटाने पर आमादा है। जबकि लोकतंत्र ऐसे ही आंदोलनों से फलता फूलता है। जनता की आवाज ही लोकतंत्र की असली आवाज है। भारत का संविधान 'हम भारत के लोग' से शुरू होता है। संविधान ताईद करता है कि भारत लोगों

का है किसी सत्ता, शासक, दल या विचारधारा का नहीं। लेकिन पिछले कुछ सालों से जनता की आवाज को लगातार अनसुना ही नहीं किया जा रहा है, बल्कि उसे बदनाम करने की साजिश भी की जा रही है।

शाहीन बाग आंदोलन को पाकिस्तानी साजिश कहा गया। शाहीन बाग की औरतों को पांच-पांच सौ रुपये में बिकने वाली बताया गया। कभी कहा गया कि शाहीन बाग में लोग बिरयानी खाने आ रहे हैं। इतना ही नहीं शाहीन बाग की औरतों का चरित्र हनन भी किया गया। प्रदर्शन में शामिल एक

शादीशुदा युवती की प्रेगनेंसी को अवैध करार देते हुए कहा गया कि शाहीन बाग में सेक्स रैकेट चल रहा है। दरअसल दक्षिणपंथियों का यह सैट पैटर्न है। स्मरणीय है कि देश के सबसे प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय जेएनयू की लड़कियों को भी भाजपाई नेताओं ने ऐसे ही लांछित किया था। जेएनयू भारत का ऐसा संस्थान है जहां सुदूर गांव और पहाड़ से दलित, आदिवासी, पिछड़े, किसान, मजदूर परिवारों के बच्चे पढ़ने आते हैं। यहां बहुत मामूली फीस में पढ़ाई होती है। इसलिए यहाँ देश का सबसे कमजोर तबका भी अपने मेधावी बच्चों को पढ़ा सकता है।

जेएनयू पर हमला सस्ती फीस वाले शिक्षण संस्थानों को खत्म करके लाखों रुपए फीस वाले निजी संस्थानों को आगे बढ़ाने की साजिश है। गौरतलब है कि जेएनयू छात्रों का आंदोलन फीस वृद्धि को वापस लेने के लिए किया गया था। यह हरचरना के बच्चों को यूनिवर्सिटी कैंपसों से बाहर धकेलने की साजिश है। अब शिक्षण संस्थान पूंजीपतियों के हवाले किए जाएंगे जहां सिर्फ अंग्रेजीदां अमीरों के बच्चे ही तालीम हासिल कर सकेंगे। महंगी शिक्षा गरीबों को कैसे नसीब होगी? शिक्षण संस्थानों से बेदखल किए गए गरीबों के बच्चे मजदूर बनने के लिए विवश होंगे। ये प्रशिक्षित सस्ते मजदूर पूंजीपतियों के कारखानों में काम करेंगे। उनके पास न तो साफ पानी होगा और ना साफ हवा। यह नई गुलामी का तंत्र होगा।

लोकतंत्र ऐसे ही आंदोलनों से फलता फूलता है। जनता की आवाज ही लोकतंत्र की असली आवाज है। भारत का संविधान 'हम भारत के लोग' से शुरू होता है। संविधान ताईद करता है कि भारत लोगों का है किसी सत्ता, शासक, दल या विचारधारा का नहीं। लेकिन पिछले कुछ सालों से जनता की आवाज को लगातार अनसुना ही नहीं किया जा रहा है, बल्कि उसे बदनाम करने की साजिश भी की जा रही है।

आज किसानों के आंदोलन को भी बदनाम किया जा रहा है। किसानों को कभी खालिस्तानी, कभी पाकिस्तान और चीन का एजेंट कहा जा रहा है। कृषि कानून किसानों को पूंजीपतियों का गुलाम बनाने का जरिया है। कॉन्ट्रैक्ट फार्मिंग और फसल की बिक्री के लिए निजी मंडियों के मार्फत किसानों की जमीन और फसल को पूंजीपतियों के हवाले करने का षड्यंत्र है।

लाखों की संख्या में जुटे किसानों की आवाज आखिर क्यों नहीं सुनी जा रही है? इसकी सबसे बड़ी वजह आजाद मीडिया का सरकारी भोंपू बन जाना है। मीडिया जन नहीं बल्कि तंत्र की हिफाजत में मुब्तिला है। मीडिया ने लोगों के सवालों को उठाना जैसे बंद कर दिया है। इससे भी नीचे जाकर मीडिया सत्तातंत्र के भोंडे खेल में शामिल हो गया है। किसी भी आंदोलन का दानवीकरण करने में सबसे बड़ी भूमिका मीडिया की ही है।

2018 में सुप्रीम कोर्ट के चार वरिष्ठतम न्यायाधीशों ने न्यायपालिका के इतिहास में पहली बार प्रेस कांफ्रेंस करके 'बाहरी' दबाव की चिंता जाहिर की थी। जजों का कहना था कि सुप्रीम कोर्ट की स्वायत्तता के बगैर लोकतंत्र की रक्षा नहीं की जा सकती। लेकिन कहीं न कहीं लोगों का भरोसा डगमगाया है। विशेष दर्जा खत्म करने के बाद कश्मीर को एक बड़ी जेल में तब्दील कर दिया गया। इंटरनेट बंद कर दिया गया। लोगों के मूल अधिकार निलंबित कर दिए गये। लंबे समय तक यह स्थिति बनी रही। इस अधिनायकवाद के दौर में आम आदमी की हालत रघुवीर सहाय के हरचरना से भी ज्यादा बदतर है।

(यह लेखक के अपने विचार हैं)

फोटो सौजन्य - गूगल

सपा सरकार में बनेगा व्यापारी सुरक्षा आयोग

समाजवादी व्यापार सभा की बैठक

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी की सरकार में व्यापारी सुरक्षा आयोग का गठन किया जाएगा। व्यापारी सुरक्षा बीमा राशि बीस लाख रुपये की जाएगी। व्यापारियों का डाटा बनाया जाएगा एवं उसे डायल 100 से जोड़ा जाएगा। यह घोषणा समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने 4 जनवरी को पार्टी मुख्यालय, लखनऊ में आयोजित समाजवादी व्यापार सभा, उप्र की राज्य स्तरीय संगठनात्मक बैठक को संबोधित करते हुए की। श्री संजय गर्ग ने इसकी अध्यक्षता और संचालन महासचिव श्री अभिमन्यु गुप्ता ने किया। राष्ट्रीय सचिव श्री राजेन्द्र चौधरी एवं प्रदेश अध्यक्ष श्री नरेश उत्तम पटेल तथा एमएलसी पम्मी जैन भी इस अवसर पर मौजूद थे।

श्री अखिलेश यादव ने प्रदेश में व्यापारियों को नववर्ष की शुभकामना दी और उनका अभिनंदन किया। उन्होंने कहा कि किसानों, व्यापारियों का भरोसा भाजपा पर नहीं है। 20 लाख करोड़ रुपए के घोषित पैकेज में व्यापारियों को क्या मिला? किसान और व्यापारी दोनों एक दूसरे पर निर्भर हैं। इनके संयुक्त प्रयास से ही आर्थिक तरक्की संभव होगी। डिजिटल व्यवस्था में छोटा व्यापारी खत्म हो जाएगा। भाजपा किसी का दुःख दर्द नहीं समझती है। वह भ्रष्टाचार की जननी हो गई हैं। भाजपा चंद बड़े कारपोरेट की पक्षधर है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा सरकार में सबसे ज्यादा लूट, हत्या की घटनाएं व्यापारियों के साथ हुई है। कोई कार्रवाई नहीं हुई।

लाकडाउन में कारखाने व व्यावसायिक प्रतिष्ठान बंद रहे फिर भी उन्हें बिजली का बिल देना पड़ रहा है। भाजपा दोहरे चरित्र की पार्टी है जो सबको बेईमान समझती है। नोटबंदी ने पूरी अर्थव्यवस्था को चौपट कर दिया है। एक वर्ष में ही राज्य के साथ भाजपा के भाग्य का निर्णय हो जाएगा। व्यापारी चुनाव में भाजपा को असली वैक्सीन लगाएंगे। उन्होंने कहा कि समाजवादी सरकार ने पारदर्शिता के साथ विकास कार्य किए थे। व्यापारियों, किसानों की सहूलियत के लिए मंडियां स्थापित की थी जिन्हें भाजपा सरकार ने बर्बाद कर दिया। समाजवादी सरकार में ही चुंगी समाप्त की गई थी और इंस्पेक्टर राज समाप्त हुआ था।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि समाजवादी पार्टी किसानों, व्यापारियों के हितों का संरक्षण करती रही है। श्री यादव ने कहा कि भाजपा इवेंट मैनेजमेंट करती है। दिखावटी काम करती है। उसने अभी तक जो भी फैसले किए हैं उससे जनता को नुकसान हुए हैं। नौजवानों को रोजगार मिला होता तो तमाम युवा आत्महत्या नहीं करते। प्रत्येक गरीब को समाजवादी सरकार ने 500 रुपये मासिक दिया था उसे ही भाजपा 6 हजार वार्षिक बताकर भटका रही है। लाकडाउन में पलायन के दौरान मृतकों के परिवारों को समाजवादी पार्टी ने एक-एक लाख रुपये की मदद की थी जबकि भाजपा सरकार ने किसी की सुध नहीं ली।

संगठन की बैठक में व्यापारियों ने कहा कि भाजपा ने व्यापारियों को धोखा दिया है। तमाम वादों के बावजूद भाजपा ने व्यापारी समाज के हित में कुछ नहीं किया। व्यापारियों की चुप्पी से भाजपा सरकार बेलगाम हो गई है। उसने व्यापारियों की कमर तोड़ दी है। भाजपा की अमानवीय सरकार है। अब व्यापारी मौन नहीं बैठेंगे, भाजपा का घमंड तोड़ेंगे। व्यापारी नेताओं का यह भी कहना था कि व्यापारी समाज को राजनीतिक ताकत की जरूरत है। उन्हें यह ताकत समाजवादी पार्टी ही दे सकती है। समाजवादी व्यवस्था में ही व्यापारी समाज के साथ न्याय हो सकता है।

व्यापारी वक्ताओं ने एक स्वर में कहा कि श्री अखिलेश यादव जी ने अपने मुख्यमंत्रित्वकाल में प्रदेश का अभूतपूर्व विकास किया और व्यापारी समाज को संरक्षण दिया था। भाजपा से उम्मीद टूटी है, अखिलेश जी पर ही भरोसा है। उन्होंने अपनी सरकार में आईटी हब, अस्पताल और बुनियादी सुविधाओं का विस्तार किया था। उनके समय ही लखनऊ-आगरा एक्सप्रेस-वे और मेट्रो रेल चली। अखिलेश जी के मुख्यमंत्री बनने पर व्यापारियों को सम्मान-सुरक्षा मिलेगी। व्यापारी समाज का कल्याण अखिलेश जी के मुख्यमंत्री बनने पर होगा। तभी सम्मान मिलेगा, छोटे माध्यम व्यापारी का हित होगा।

व्यापारियों ने श्री अखिलेश यादव को विधानसभा चुनाव 2022 में उत्तर प्रदेश का मुख्यमंत्री बनाने की शपथ ली। व्यापारियों ने कहा कि वे पार्टी के संविधान के प्रति सच्ची निष्ठा रखेंगे और पार्टी अध्यक्ष के निर्देशों का अक्षरशः पालन होगा। उन्होंने कहा कि शहर के हर बाजार में समाजवादी पार्टी की उपस्थिति को सुनिश्चित करेंगे। वे एक वर्ष दिन रात समाजवादी सरकार बनाने में लगा देंगे। व्यापारी एकजुट रहेंगे। बैठक में सर्वश्री शैलेन्द्र श्रीवास्तव प्रेसीडेंट स्माल इण्डस्ट्रीज ऐण्ड मैन्यूफैक्चरर्स एसोसिएशन (सीमा), पवन मनोचा मण्डल प्रभारी, अरविन्द श्रीवास्तव उपाध्यक्षगण, पवन गुप्ता, अजय सूद, प्रदीप जायसवाल एवं अंशुल गुप्ता कोषाध्यक्ष, रामकिशोर अग्रवाल, शकील खां तथा राम ज्ञान गुप्त सहित राज्य भर के सैकड़ों व्यापारी शामिल हुए।

नयी हवा है ~ नयी सपा है
बड़ों का हाथ, युवा का साथ
समाजवादी पार्टी
www.samajwadiparty.in

सावित्रीबाई फुले

सामाजिक क्रांति की युगनायिका

प्रियंका यादव

उन्नीसवीं सदी के भारतीय समाज में रूढ़िवादी व्यवस्था और पितृसत्ता अपने चरमोत्कर्ष पर था। तत्कालीन मान्यताओं, अंधविश्वास और पुरुषवादी वर्चस्व के परिणामस्वरूप महिलाओं को यातनाएं, शारीरिक और मानसिक अत्याचार, अमानुषिक व्यवहार सहना पड़ता था। महिलाओं को घर की दहलीज़ लांघने की भी अनुमति नहीं थी, उन्हें गुलामों की तरह रखा जाता था । ऐसी विकराल परिस्थितियों में सावित्रीबाई फुले ने पुरातन भारत में महिला सशक्तिकरण की नींव रखी और उन्हें सामाजिक शोषण से मुक्ति, समान शिक्षा और अवसर दिलाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

माता सावित्रीबाई फुले (3 जनवरी 1831-10 मार्च 1897) भारत की प्रथम महिला शिक्षिका और प्राचार्या थीं। वे एक समाज सुधारक, पहली आधुनिक भारतीय नारीवादी, समाजसेविका, समाजवादी चिंतक और कवयित्री भी थीं। लैंगिक न्याय और सामाजिक न्याय की पक्षधर सावित्रीबाई ने रुढ़िवादी परंपराओं और सामाजिक कुरीतियों का मुखर विरोध किया।

समाजवाद, जो मनुष्य के विकास की आधारशिला होता है, जो उसके विकास के लिए समुचित अवसरों की व्यवस्था की उपलब्धता को सुनिश्चित करता है और भेदभाव रहित वातावरण प्रदान करता है, ऐसे विचार और संकल्पना की कमी के कारण आज़ादी से पूर्व के भारत में स्त्रियों को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार नहीं था। ऐसे में सावित्रीबाई का महिला अधिकारों के हनन, अशिक्षा, छुआछूत, बाल विवाह, विधवा अभ्यास के खिलाफ आवाज़ उठाना महिलाओं को मुख्यधारा से जोड़ने में सफल साबित हुआ। सामाजिक न्याय की पुरोधा और समता व समानता में विश्वास रखने वाली सावित्री बाई फुले न सिर्फ महिलाओं की वरन शूद्रों की भी उद्धारक हैं। उन्होनें शूद्रों को तिरस्कार तथा पराधीनता के उस दल दल से

उबारा जिसमें धर्मांध तथा धर्म के ठेकेदारों ने उन्हें फँसा दिया था।

सावित्रीबाई फुले ने अपने दत्तक पुत्र यशवंत का अंतर्जातीय विवाह करवाया जो कि आधुनिक भारत का पहला अंतर्जातीय विवाह था। उन्होनें बाकी लोगो को भी अंतर्जातीय विवाह के लिए प्रोत्साहित किया जिससे दो जातियों के बीच परस्पर निकट संबंध स्थापित हो तथा अंततः जातिवाद की भावना समाप्त हो जाए।

सावित्रीबाई के जीवन साथी, शिक्षक, संरक्षक और गुरु ज्योतिबा फूले थे। ज्योतिबा फुले ने अपनी पत्नी को घर पर ही पढ़ाया और उन्हें शिक्षिका के तौर पर प्रशिक्षित किया। उनकी आगे की शिक्षा की ज़िम्मेदारी महामना ज्योतिबा फुले के मित्र सखाराम यशवंत प्रान्जापे और केशव शिवराम भावेलकर ने संभाली।

माता सावित्रीबाई फुले भारत की प्रथम महिला शिक्षिका और प्राचार्या थीं। वे एक समाज सुधारक, पहली आधुनिक भारतीय नारीवादी, समाजसेविका, समाजवादी चिंतक और कवयित्री भी थीं

सावित्रीबाई वर्ण व्यवस्था में कमतर मानी जाने वाली माली जाति से थीं। हाशिए पर खड़े समाज से आने वाली महिला के लिए शिक्षा प्राप्त करना

उस समय असंभव था पर उन्होनें अपनी मेहनत, लगन और इच्छाशक्ति से अपना नाम इतिहास के पन्नों में स्वर्ण अक्षरों से अंकित करवा दिया।

3 जनवरी 1848 को पुणे के भिड़ेवाडी शहर में सावित्री बाई फुले ने बालिकाओं की शिक्षा के लिए पहला स्कूल खोला। यह स्कूल 9 छात्राओं से शुरू हुआ था पर वे एक वर्ष के भीतर ही पांच नए विद्यालय खोलने में सफल हुए। स्कूल में पढ़ाने की वजह से समाज का उनका विरोध करता और ताने भी मारता था। हौसला तोड़ने के लिए लोग उनपर गोबर, कूड़ा और पत्थर फेंकते थे। खुद को समाज का ठेकेदार मानने वाले जातिवादी ताकतों द्वारा उन्हें भद्दी-भद्दी गालियां

“सावित्रीबाई जी को हमेशा याद किया जाएगा”

समाज सुधारक एवं भारत की प्रथम महिला शिक्षिका श्रीमती सावित्रीबाई फुले की 189वीं जयंती 3 जनवरी 2021 को समाजवादी पार्टी कार्यालय में सादगी से मनाई गई। सावित्रीबाई फुले के चित्र पर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने पुष्पांजलि अर्पित की और उनके रास्ते पर चलने का संकल्प दोहराया। श्री अखिलेश यादव ने इस अवसर पर कहा कि सावित्रीबाई फुले ने महिलाओं और दलित जातियों को शिक्षित करने की पहल की थी। उन्होंने विधवा विवाह कराने, छुआछूत मिटाने को अपना मिशन बनाया। जब लड़कियों पर पढ़ने लिखने की पाबंदी थी तब कट्टरवादी लोगों से टकरा कर उन्होंने पुणे में 3 जनवरी 1848 को 9 छात्राओं के साथ विद्यालय की स्थापना की जो उस समय बड़े साहस का कार्य था। श्री अखिलेश यादव ने कहा कि सावित्री बाई फुले को समाज सुधार के काम में रूढ़िवादी समाज से विरोध में बहुत कुछ सुनना और सहना पड़ा किन्तु उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। उन्हें स्त्री अधिकारों एवं शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका के लिए हमेशा याद किया जाएगा।

और जान से मारने की धमकी दी जाती थी।

इसके बावजूद वे बहुत विनम्रता से कहा करती थीं - 'मेरे भाई, मैं तुम्हारी बहनों को पढ़ाकर एक अच्छा कार्य कर रही हूं। आप के द्वारा फेंके जाने वाले पत्थर और गोबर मुझे रोक नहीं सकते, बल्कि इससे मुझे प्रेरणा मिलती है। ऐसा लगता है जैसे आप बरसा रहे हों। मैं दृढ़ निश्चय के साथ अपनी बहनों की सेवा करती रहूंगी। मैं प्रार्थना करूंगी कि भगवान आप को बरकत दें।' गोबर व कूड़े से निजात पाने के लिए वे एक दूसरी साड़ी अपने बगल दबाकर घर से निकलती थी और स्कूल पहुंचने पर अपनी साड़ी बदल लेतीं। उनकी मेहनत और उम्मीद पत्थरों के ज़ख़्म और कूड़े व गोबर से कई ज़्यादा अधिक थी। उनके द्वारा जलाए जा रहे ज्ञान के दीपक को बुझाने के लिए लोगों ने उनके पिता के कान भरे और भड़काकर उन्हें घर से निकलवा दिया था। इसके बावजूद भी वे मानव समाज के उत्थान के लिए सभी जातियों की लड़कियों को मुफ़्त शिक्षा प्रदान करती थीं।

महिलाओं के आत्म-सम्मान और स्वाभिमान को वापस लौटाने के लिए माता सावित्री ने अभूतपूर्व कार्य किए। बाबा साहब भीमराव अंबेडकर ने “भारत में जातियां – उनका तंत्र, उत्पत्ति और

सावित्री बाई समाज की बेहतरी के लिए काम करती रहीं। उन्होनें ज्योतिबा फुले के अधूरे सपनों को और अपनी सभी ज़िम्मेदारियों को बखूबी निभाया। उनका मानना था कि ऊँच-नीच शोषण करने वालों के द्वारा बनाया गया है

विकास” नामक एक शोध पत्र लिखा है, जिसमें वो कहते हैं कि स्त्री- अपनी जाति से बाहर किसी से विवाह न कर पाए इसके लिए ऊंची जाति के लोगों ने सती प्रथा, बाल विवाह और विधवा विवाह के नियम बनाए हैं। बाल विवाह उस समय प्रचलित परंपरा थी, जिसके चलते खंडोंजी नेवसे ने अपनी पुत्री सावित्रीबाई फुले का विवाह 1840 में 9 वर्ष की छोटी उम्र में करा दिया था। कम उम्र की लड़कियों का विवाह अधेड़ उम्र के पुरुषों से हो जाता था, इसमें कई सारी विधवा हो जाती थीं । विधवा स्त्रियों को समाज में हेय दृष्टि से देखा जाता था, उन्हें अपशकुन समझा जाता था। उन्हें शौक-श्रृंगार करने, रंगीन साड़ी पहनने, अच्छा भोजन करने की मनाही थी।

कई बार ये विधवा अपने किसी पारिवारिक सदस्य और सगे संबंधियों के हवस का शिकार हो जाती थीं। गर्भवती होने के बाद जीवन समाप्त करने के लिए वे आत्महत्या का कदम उठाती थीं। ऐसी स्त्रियों के लिए फुले दंपति ने वर्ष 1853 में अपने सामाजिक आंदोलन के साथी और पड़ोसी मित्र उस्मान शेख के घर में बाल हत्या प्रतिबंधक गृह शुरू किया। जिसमें बेसहारा गर्भवती स्त्रियों की देखभाल की जाती थी और उनकी प्रसूति भी करवाई जाती थी। गृह की पूरी ज़िम्मेदारी सावित्रीबाई फुले स्वयं उठाती थीं। उन्होनें उस्मान शेख की बहन फ़ातिमा शेख की सहायता से मुस्लिम महिलाओं के लिये प्रौढ़ शिक्षा का केन्द्र खोला। फ़ातिमा शेख पहली मुस्लिम शिक्षिका के रूप में जानी जाती हैं।

विधवा स्त्रियों के सिर मुंडवाने की कुप्रथा उस समय प्रचलित थी, जिसे खत्म करने के लिए उन्होंने नाइयो को समझाया। उन्हें संगठित किया

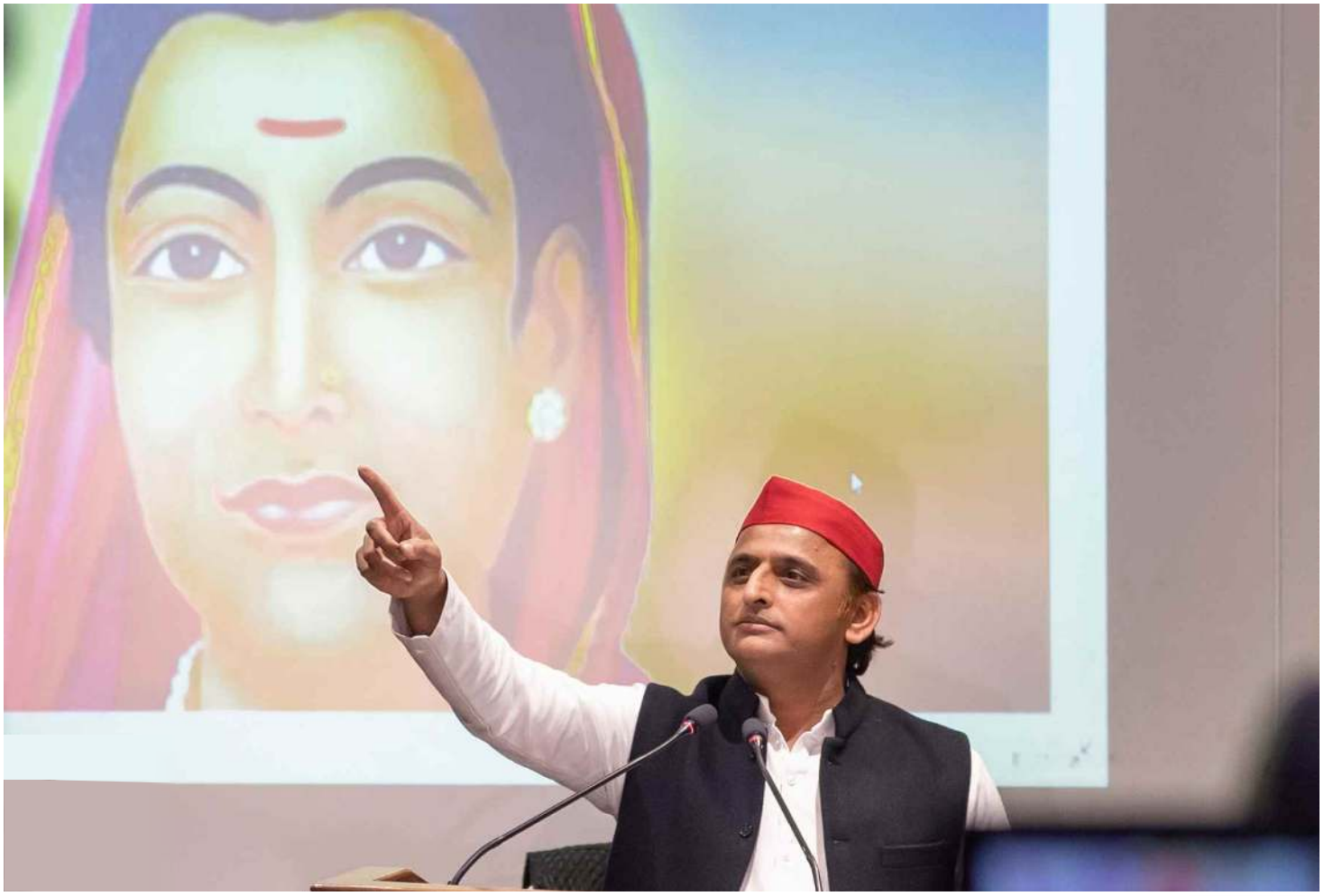

और आंदोलन के माध्यम से इसे रोकने के लिए हुंकार भरी। इसमें भी उनकी जीत हुई । सावित्रीबाई ने ज्योतिबा फुले के द्वारा बनाए गये सत्यसोधक समाज की सक्रिय सदस्य रहकर शूद्रों, अति-शूद्रों को रूढ़िवादी व्यवस्था और धार्मिक कर्मकांडों से मुक्ति दिलाने का प्रयास किया।

वे अपनी एक कविता में लिखती हैं- "जाओ जाकर पढ़ो-लिखो.. बनो आत्मनिर्भर, बनो मेहनती काम करो ज्ञान और धन इकट्ठा करो.. ज्ञान के बिना हम जानवर बन जाते है इसलिए, खाली न बैठो, जाओ.. जाकर शिक्षा लो दमितों और त्याग दिए गयों के दुख का अंत करो.. तुम्हारे पास सीखने का सुनहरा मौका है, इसलिए सीखो और जाति के बंधन तोड़ दो....।"

सावित्रीबाई बाई फुले ने अपने जीवन काल में दो काव्य संग्रहों की रचना की। उनका पहला काव्य-फुले 1854 में तब छपा जब वे मात्र तेईस वर्ष की ही थीं उनका दूसरा काव्य-संग्रह बावनकशी सुबोधरत्नाकर 1891 में आया, जिसे सावित्रीबाई फुले ने अपने जीवनसाथी ज्योतिबा फुले की परिनिर्वाण प्राप्ति के बाद उनकी जीवनी रूप में लिखा था।ज्योतिबा फूले का निर्वाण 1890 में हुआ इसके बाद भी सावित्री बाई समाज की बेहतरी के लिए काम करती रहीं। उन्होनें ज्योतिबा फुले के अधूरे सपनों को और अपनी सभी ज़िम्मेदारियों को बखूबी निभाया। उनका मानना था कि ऊँच-नीच परमात्मा ने नहीं बनाया है। बल्कि यह शोषण करने वालों के द्वारा बनाया गया है।

1897 में पुणे शहर में प्लेग फैल गया। उनका सारा समय पीड़ितों की सेवा में गुज़रने लगा। प्लेग से पीड़ित बच्चे पांडुरंग गायकवाड की देखभाल करते समय उन्हें भी प्लेग ने जकड़ लिया। 10 मार्च 1897 को रात 9 बजे क्रांतिज्योति सावित्री माता का देहांत हो गया। जिंदगी के आखिरी पड़ाव तक वे मानवता के हित में वंचित तबके, खासकर महिलाओं और शूद्रों के अधिकारों के लिए संघर्ष करती रहीं। उनका जीवन व सामाजिक कार्य हमारे लिए प्रेरणादायक है। उनके विचार आज भी प्रासंगिक है, ज़रूरत है तो इन्हें आत्मसात करना ताकि एक समतामूलक समाज की रचना की जा सके।

(लेखिका टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान, मुंबई की छात्रा हैं)

साफ़ और बेबाक

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

Socialist Leader of India. Chief Minister of UP (2012 - 2017)

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

मुरादनगर श्मशान हादसे ने साबित कर दिया है कि श्मशान पर राजनीति करनेवाली भाजपा का भ्रष्टाचार किसी भी जगह को नहीं छोड़ता है. उप्र की जनता में भाजपा सरकार के समय में हो रही इस तरह की निम्न श्रेणी की मुनाफ़ाखोरी से बेहद ग़ुस्सा है.

श्मशान हादसे ने भाजपा सरकार को शर्मसार कर दिया है.

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

हरे कृष्णा
हरे कृष्णा
कृष्णा कृष्णा
हरे हरे
हरे रामा
हरे रामा
रामा रामा
हरे हरे

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

स्नान, दान एवं सूर्य उपासना के महापर्व मकर संक्रांति की समस्त प्रदेश एवं देशवासियों को हार्दिक शुभकामनायें।

#मकर_संक्रांति
#HappyMakarSankranti

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

मिला चित्रकूट का आशीर्वाद
फिर से आयेगी सपा सरकार

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

हमें वैज्ञानिकों की दक्षता पर पूरा भरोसा है पर भाजपा की ताली-थाली वाली अवैज्ञानिक सोच व भाजपा सरकार की वैक्सीन लगवाने की उस चिकित्सा व्यवस्था पर भरोसा नहीं है, जो कोरोनाकाल में ठप्प-सी पड़ी रही है।

हम भाजपा की राजनीतिक वैक्सीन नहीं लगवाएँगे।

सपा की सरकार वैक्सीन मुफ़्त लगवाएगी।

Following

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

भाजपा सरकार किसानों के प्रति असंवेदनशील होकर जिस प्रकार उपेक्षापूर्ण रवैया अपना रही है, वो सीधे-सीधे अन्नदाता का अपमान है. घोर निंदनीय!

अब तो देश की जनता भी किसानों के साथ खड़ी होकर पूछ रही है :

दुनिया में उठता हुआ धुआँ दिखता है जिन्हें
घर की आग का मंज़र, क्यों न दिखता उन्हें

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

सपा के समय में पूर्वांचल की खुशहाली के समाजवादी एक्सप्रेस-वे का काम शुरू हुआ था, जिसे भाजपा सरकार बना न सकी. अब सपा की सरकार आयेगी और हवाई जहाज उतारकर इसका उद्घाटन करेगी.

उप्र की जनता त्रस्त है भाजपा सरकार के ऐसे विकास से
नाम है एक्सप्रेस-वे, पर बना रही है बैलगाड़ी की चाल से

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

1 जनवरी 2021 — पार्टी कार्यालय में नेताजी व अन्य कार्यकर्ताओं के साथ। सभी को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनायें।

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

यूपी में आये दिन घटित होते अपराध,भाजपा के खोखले दावों की पोल खोल रहे हैं।डर और दहशत के इस माहौल में भी बाबा मुख्यमंत्री रामराज की बात करते हैं।अपराध को बढ़ावा देकर भाजपा भी किसी सहयोगी की तरह कार्य कर रही है।

जनता के सामने भाजपा का पर्दाफ़ाश हो चुका है।

#अपराध_में_सहयोगी_सरकार

पंजीकृत डाक पंजीकरण संख्या GPO/LW/NP-300/2021-2023

मिलकर आप और हम लहरायेंगे सपा का परचम

समाजवादी पार्टी

www.samajwadiparty.in